

REVIEW OF RESEARCH



ISSN: 2249-894X

UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)

VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2017



पचदशीना चित्रदीप प्रकरणना आधारे ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या

डॉ. महेशकुमार जी. पटेल

आसिस्टन्ट प्रोफेसर, अनुसन्नातक संस्कृत विभाग,
सरदार पटेल युनिवर्सिटी, वल्लभविद्यानगर.

आजना युगनो मानवी नाशवंत जगतना पदार्थने प्राप्त करवा सतत संघर्ष करतो रहे छे. आ नाशवंत पदार्थो लांबा समय सुधी सुख आपता नथी. जे कंइ प्राप्त थयुं छे ते पदार्थोनुं रक्षण करवुं पण कष्टदायक छे. सांप्रत समयमां समग्र विश्व आतंकलहथी पीडित छे. हिंसानुं प्रमाण वधी रह्युं छे, मारुं-तारुं आवा जे भेदोधी मानवीना जीवननी शाश्वत शांति छीनवाइ गइ छे. अद्वैतनुं ज्ञान मनुष्यने सत्यना मार्ग लइ जाय छे अने अनुभूति पण करावे छे. अने वेदांतमां कह्युं छे के ब्रह्म सत्य छे, जगत् मिथ्या छे. "सर्व खलु इदं ब्रह्म"^१ आ सर्व जगत् ब्रह्मरूप छे जयां नेह नानाऽस्ति किञ्चन्^२ भेद जेवुं कंइ छे ज नहीं. आवा ज्ञानथी विश्वमां शांतिनी स्थापना थाय अने जीवन सुखमय बने.

जगतना मिथ्यापणाना ज्ञानथी जगतना पदार्थो प्रत्येनी मनुष्यनी जे आसक्ति छे तेने ओछी करे छे. परिणामे घणा बधा दुःखो स्वाभाविक पणे ज निवृत्त थइ जाय छे. अद्वैतवेदांत परंपराना ग्रंथोमां विद्यारण्य मुनि द्वारा रचित पंचदशीनुं आगवुं महत्व छे. अहीं "ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या" तथा जीव अने ब्रह्मनी अेकतानुं प्रतिपादन खूब ज सुंदर रीते करवामां आव्युं छे जे अद्वैतवेदांतनी ज्ञानपरंपराने समजवा अने जीवनमां सार्थक करवा माटे खूब उपयोगी ग्रंथ छे.

आ द्रश्यमान जगत् ब्रह्मरूप छे. ब्रह्म उपर आपणे जगतनो आरोप करीअे छीअे. चित्रदीप प्रकरणमां परमात्मा उपर आरोपित जगतनी स्थितीनुं विस्तृत वर्णन करवामां आव्युं छे. अहीं चित्रपटना आधारे परमात्मा/ब्रह्ममां जोवा मल्ती चार अवस्थाने समजावता कहे छे के—

यथा धौतो घटितश्च लान्छितो रञ्जितः पटः ।

चिदन्तर्यामी सूत्रात्मा विराट् चात्मा तथैर्यते ॥३॥

जेम चित्रयुक्त वस्त्र पर धौत, घटित, लांछित अने रंजित ओवी चार अवस्थाओ रहे छे तेम परमात्मामां चैतन्य, अंतर्यामी, सूत्रात्मा अने विराट् अेम चार अवस्थाओ छे. हवे, आ चार अवस्थाओने विद्यारण्य मुनि विस्तारथी समजावे छे. धोयेलुं, स्वच्छ अने अन्य कोइ द्रव्य ना संयोग विनानुं श्वेत पट ते धौत कहेवाय छे. तेना उपर अन्ननुं लेपन करवामां आवता तेने घटित कहेवामां आवे छे. कलमथी तेने रेखांकित करतां तेनी त्रीजी अवस्था लांछित बने छे. जयारे तेना पर रंगो पूर्वामां आवे त्यारे ते चित्रपट तेनी चोथी अवस्थाने प्राप्त करे छे जेने रंजित कहेवामां आवे छे. तेम परब्रह्म स्वभावथी ज चित् स्वरूप छे, शुद्ध छे, माया अने तेना कार्यथी रहित छे. आ तेनी प्रथम चैतन्य अवस्था छे. आ शुद्ध परमात्माने चैतन्यरूप कहेवामां आवे छे. शुद्ध परमात्मानो जयारे मायानी साथे संबंध थाय छे—जयारे ते मायाथी युक्त बने छे त्यारे तेने अंतर्यामी कहेवामां आवे छे. शूक्ष्मसृष्टिनी साथी अेटले के अपंचीकृत पांच महाभूतो अने तेमनां कार्य, प्राण, अंतःकरण अने इन्द्रियोनी साथे संबंध पामवाथी तेने सूत्रात्मा कहेवामां आवे छे. स्थूलसृष्टिनी साथे अेटले के पंचीकृत पांचमहाभूतो अने तेमनां कार्यनी साथे संयोग पामवाथी ते विराट् कहेवाय छे. आ तेनी चोथी अवस्था छे. आगळ तओ कहे छे के,



स्वतश्चिदन्तर्यामी तु मायावी सूक्ष्मसृष्टिः ।

सूत्रात्मा स्थूलसृष्टयैव विराङित्युच्यते परः ॥४

आ संपूर्ण जगत् परब्रह्ममां ज रहेलु छे. जेवी रीते पटमां चित्रो रहेला छे तेम आ परब्रह्ममां ज ब्रह्मथी लइने तृण् सुधीना तमाम पशु—पक्षी, मनुष्य वगेरे चेतनतत्व तथा पर्वत, नदी, समुद्र वगेरे जड तत्व रहे छे. आ जीवो पोतपोताना प्रारब्धकर्म प्रमाणे भिन्न भिन्न शरीर धारण करीने जन्ममरणना चक्रमां फर्या करे छे.^५ परब्रह्म तो निर्विकारी छे.

चित्रपटमां मनुष्य माटे जे वस्त्रो छे ते ठंडी आदिथी मनुष्यनुं रक्षण करतां नथी. आथी, खरेखर ते वस्त्र नथी परंतु वस्त्रनी जेम कल्पित छे.^६ तेवी रीते जगतना पदार्थो पण कल्पित छे. मायाना कार्यरूप छे. अज्ञानी मनुष्यो चित्रमां कल्पेला वस्त्रमां रहेला रंगोने “वस्त्रमां रहेला छे” तेम कहे छे तेवी रीते ते अज्ञानीओ चिदाभासरूप जीवमां रहेला जन्ममरणरूप संसारने चेतनमां अर्थात् ब्रह्ममां रहेला माने छे.^७ खरेखर जन्ममरणरूप आ संसार चेतन अेवा ब्रह्मनो नथी. आत्मा उपर संसारनो जे आरोप करवामां आवे छे तेनुं मूळ कारण अविद्या छे. संसारः परामार्थोऽयं संलग्नः स्वात्मवस्तुनि । इति भ्रान्तिः अविद्या..... ॥८॥ आ संसार परमार्थ सत्य छे अने ते चैतन्य स्वभाववाळा आत्मामां सारी रीते जोडायेलो छे. आवी भ्रांतीरूप अविद्याने विद्या वडे दूर करी शकाय छे. विद्याना स्वरूपनुं वर्णन करता पंचदशीकार लखे छे के, आत्माभासस्य जीवस्य संसारो नात्मवस्तुनः ॥९॥ खरेखर आ जे संसार छे ते चेतनना आभासरूप जीवनो छे, चेतनरूप आत्मानो नहीं आवुं जे ज्ञान थाय छे ते ज विद्या छे. अने आ विद्यानी प्राप्ति आत्मविचारथी थाय छे. व्यक्तिअे जीव, जगत् अने परमात्माना स्वरूपनो निरंतर विचार करवो अने आ विचार शास्त्रोक्त रीते करवो.

आम करवाथी जीव अने जगतना भावनो बाध थाय छे अने आत्मा ज सत्य स्वरूपे बाकी रहे छे. हवे आपणने प्रश्न थाय छे के, आ जीव अने जगतनो बाध अटले शुं ? तो तेने समजावता कहे छे के— जीव अने जगतनी प्रतीती न थवी ते बाध नथी परंतु ते बन्नेना मिथ्यापणानो निश्चय थाय ते बाध छे.

विद्यारण्य मुनि समजावे छे के, आत्मविचारथी परोक्ष अने अपरोक्ष अम बे प्रकारनी विद्या उपजे छे. आमां अपरोक्ष विद्या अटले आत्मानुं प्रत्यक्ष ज्ञान अने तेनी प्राप्ति थाय अर्थात् आत्मानुं प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त थाय त्यारे आत्मविचार पूर्ण थाय छे.

परोक्षा चापरोक्षेति विद्या द्वेष्टा विचारजा ।

तत्रापरोक्षविद्यात्पौ विचरोऽयं समाप्यते ॥१०॥

जो मनुष्य ब्रह्म अस्ति— “ब्रह्म छे” अम जाणे तो ते परोक्षज्ञान छे अने — “हुं ब्रह्म छु” अम अनुभवथी जाणे तो ते ज ब्रह्मसाक्षात्कार छे अम कहेवाय.^{११}

वस्त्र पर बनाववामां आवेला चित्रनी जेम पोताना स्वरूपरूप चैतन्य ब्रह्ममां माया वडे आ जगतरूप चित्र प्रतीत थाय छे. आपणे बधाअे अे जगतरूप चित्रनी उपेक्षा करीने स्वस्वरूपभूत चैतन्यमां ज बुद्धिने स्थिर करवी जोइअे.

जगच्चित्रं स्वचैतन्ये पटे चित्रमिवार्पितम् ।

मायाया तदुपेक्ष्यैव चैतन्यं परिशेष्यताम् ॥११॥

आ जगतने जे चित्ररूपे जुअे छे ते मोहने पामतो नथी, मोहग्रस्त थतो नथी. पश्यन्तोऽपि जगच्चित्रं ते मुहूर्न्ति न पूर्ववत् ॥१२॥ महाभाष्यकार पतंजलि प्रथम आहिकमां कहे छे के— चतुर्भिर्भ्यं प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति — आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेनेति ॥१३॥ चार प्रकारे विद्या उपयोगी थाय छे : गुना सानिध्यमां मेळवेल ज्ञान, तेनुं चिंतन—मनन अने निदिध्यासन करी पोताना व्यहारमां आवे ते विद्या—ज्ञान सार्थक बने छे. अद्वैत वेदांतना ज्ञानथी, तेनुं सतत चिंतन—मनन करी, जीवाता जीवनमां तेनो उपयोग करीअे अने जगतनुं मिथ्यापणं अने ब्रह्मनी नित्यताने समजीने जगतनो मोह ओछो करी शास्त्रोक्त रीते पोताना कर्तव्यकर्मो करीअे. अन्यने पण आ ज्ञान आपीअे के जेथी विश्वने तमाम प्रकारनी हिंसाथी मुक्त बनावी शकीअे तो ज जीवनने सत्यम्, शिवम् अने सुन्दरम् बनावी शकीअे अने विश्वमां शांतिनी स्थापना करी शकीशुं.

अंत्यनोंध :

१. छांदोग्य उपनिषद्
२. बृहदारण्यक उपनिषद्
३. पञ्चदशी ६-२ कृष्णानन्द सागर, विद्यारण्यमुनिविरचिता पञ्चदशी, श्रीमाधवानन्द आश्रम धर्मज, खेदा—गुजरात, प्रथम संस्करण १६८४, पृ. १५२
४. पञ्चदशी ६-४, तदेव, पृ. १५३

-
५. पञ्चदशी ६-५, तदेव, पृ. १५३
 ६. पञ्चदशी ६-६, तदेव, पृ. १५३
 ७. पञ्चदशी ६-८, तदेव, पृ. १५४
 ८. पञ्चदशी ६-१०, तदेव, पृ. १५५
 ९. पञ्चदशी ६-११, तदेव, पृ. १५५
 १०. पञ्चदशी ६-१४, तदेव, पृ. १५७
 ११. पञ्चदशी ६-१६, तदेव, पृ. १५७
 १२. पञ्चदशी ६-२८६, तदेव, पृ. २६५
 १३. पञ्चदशी ६-२८०, तदेव, पृ. २६५
 १४. शास्त्री चारुदेव, व्याकरण—महाभाष्य, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, प्रथम संस्करण, संवत् २०२५, पृ. २०

संदर्भग्रंथ सूचि :

१. कृष्णानन्द सागर, विद्यारण्यमुनिविरचिता पञ्चदशी (रामकृष्णव्याख्या समलङ्घकृता) श्रीमाधवानन्द आश्रम, धर्मज, खेदा—गुजरात, प्रथम संस्करण, १६८४
२. शास्त्री जगदिश, उपनिषदसंग्रहः, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पुनर्मुद्रित संस्करणम्, २०११
३. शास्त्री चारुदेव, व्याकरण—महाभाष्य (प्रथम नवाहिक) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, प्रथम संस्करण, संवत् २०२५